रंग जीवन के

काव्य संग्रह

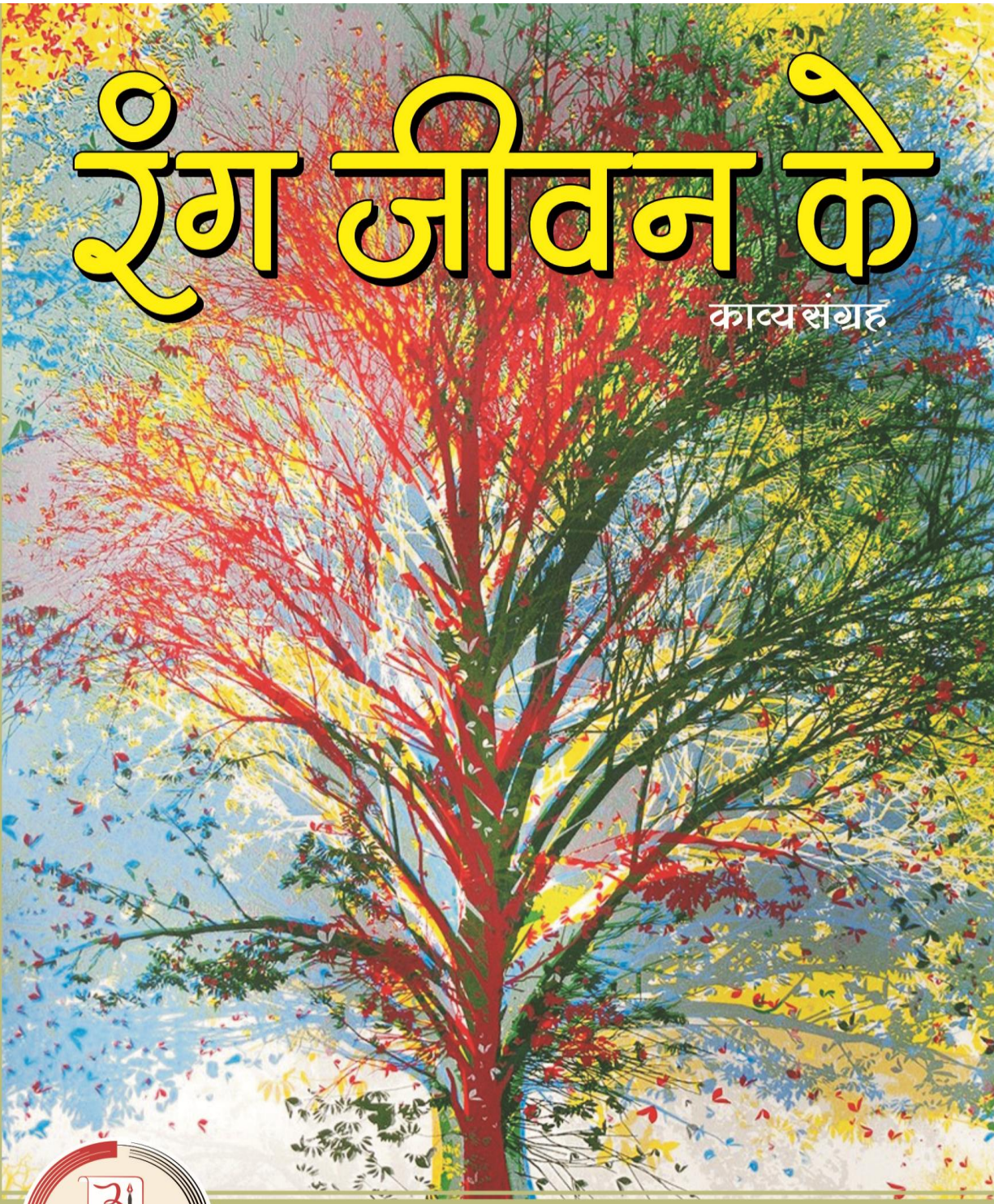

लता नायर

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

रंग जीवन के

काव्य संग्रह

लता नायर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-055-1"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं मिडिया प्रभारी- संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **लता नायर**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

RANG JEEVAN KE BY LATA NAYAR

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समर्पण

मम्मी- स्व. लीला नायर
पापा-स्व. पी.आर. कुटट्पन'

को

जिनकी
प्रेरणा और प्रोत्साहन
का
परिणाम
है।

रंग जीवन के

बचपन से मुझे कागज में कुछ भी लिखने का अजीब शौक था। मन में जो बातें उठती उसको आडा तिरछा लिखते रहती थी। गाना गुनगुनाने की आदत के साथ अपने तरीके से मन के भाव पिरोने का प्रयास करती। कभी माँ को सुनाती कभी पापा को। दोनों बडे ध्यान से सुनते और कहते- "ठीक है और अच्छा लिखो"! शायद यही वाक्य मेरे लिए प्रेरणा का सबसे बडा स्त्रोत बना। फिर लिखने लगी मन के जज्बात, समसामयिक घटनाओं को सुन कर पढ कर देख कर। शायद वही छंद मुक्त कविता कहलाने लगी।

लेखन उम्र के साथ गहराता चला गया। लेकिन यह कविता है या नहीं, समझ नहीं पा रही थी, हिम्मत जुटा कर समाचारपत्रों में भेजना शुरू की।कुछ ने छापा कुछ ने नहीं। छपने पर अनुभव हुआ कि मैं लिख सकती हूँ। मेरे माता पिता और भईया भाभी ने मेरा हौसला बढाया।

जीवन में कई उतार चढाव आये। मैने अपने आप को बडी मुश्किल से संभाला, लेकिन लेखन को विराम नहीं दिया। वाट्सएप फेसबुक से जुडने के बाद कई बडे रचनाकारों को पढने का मौका मिला और सीखने का भी। फेसबुक के माध्यम से डॉ. सपन सिन्हा (पापाजी) से मुलाकात हुई, उनसे मिलने के बाद मुझे ऐसा लगा मेरे गुरु मिल गये। उनके मार्गदर्शन में मेरी लेखनी में निखार आने लगा।

छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग के प्रांतीय सम्मेलन कोरबा में पहली बार डॉ. सपन सिन्हा और उनकी पत्नी श्रीमती स्नेहलता सिन्हा (अम्मा) से मिली, ममता की सागर कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। दो दिवस उन दोनो के सानिध्य में रहकर मैने कई जन्मो का सुख पा लिया। उनके निर्देशन में मैं प्रांतीय कवि सम्मेलन कोरब में पहली बार काव्य पाठ की। तथा राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय सम्मेलन माउंट आबू में पापा जी के मार्गदर्शन में काव्य पाठ करने का मौका मिला।

धीरे धीरे मेरी पहचान जिले और राज्य तथा राज्य के बाहर भी होने लगी। कई मंचो पर काव्यपाठ करने का मौका मिला। आकाशवाणी केन्द्र अम्बिकापुर से भी मेरी कविताओं का प्रसारण हुआ।

मेरी कविता संग्रह "रंग जीवन के" को पुस्तक का आकार देने में मेरे भईया रमेश नायर तुलसी भाभी, छोटे भाई महेश-उषा, तथा राजेश-रजनी और जीजा श्री कार्तिक नायर-रेखा का बडा योगदान है, मेरे दोनो बच्चे, सोनल बेटी और बेटा तनिष्क जिन्हें अपनी मम्मी के कविता संग्रह का इंतजार है।

मेरे पापा- मम्मी के न रहने पर भी हमे माता-पिता की कभी कमी महसूस नहीं होने देने वाले डॉ. सपन सिन्हा और श्रीमती स्नेहलता सिन्हा जिनके अथक प्रयास से यह कविता संग्रह आपके हाथों में है।

लता नायर

अनुक्रमणिका

१	जाग जा	७
२	तन्हाँ	८
३	कान्हा	९
४	है कौन	१०
५	क्यों	११
६	कलम	१२
७	ऐ जिंदगी	१३
८	बसंत बयार	१४
९	भावना	१५
१०	कर्ज	१६
११	आँखें	१७
१२	कमल	१८
१३	दरिया	१९
१४	रणभूमि	२०
१५	बहू	२१
१६	चूडियां	२२
१७	माँ	२३
१८	मिट्टी कि दीया	२४

१६	बेटी और पेड़	२५
२०	क्या लिखूँ	२६
२१	काश! ऐसा होता	२७
२२	कान्हा जी	२८
२३	अग्निपथ	२९
२४	अखबार	३०
२५	मेरा स्कूल	३१
२६	पंख	३२
२७	फना	३२

जाग जा

उठ! उठ!! उठ!!!
मत हार
अपने मन के
अंतरद्वंद से!
छल से!
कपट से!
धोखे से!
उठ! उठ!! उठ!!!
जगा
अपने नारित्व को
बना सबल
खुद को
कर सवारी
अश्व की
बनाने राह अपना
बन
वीरांगना!!
सजा ले
देह पर कवच
कर धारण
अस्त्र-शस्त्र-कृपाण
बाँध ले पगड़ी
मान! सम्मान!! स्वाभिमान!!
की
उठ! उठ!! उठ!!!

तन्हाँ

तन्हाँ
कहाँ हूँ
मैं

कारवाँ है
साँसों का
साथ
मेरे

बहता है
लहू
रगों में
धडकता है
दिल

देखती है
आँखें
सब कुछ

कह जाती है
जुबां
दिल की
आवाज बन कर
‘‘मै हूँ ना’’

कान्हा

जब-जब
मिलते हो
प्यार
हद से ज्यादा
बढ़
जाता है..
देने को
कुछ भी नहीं
मन
सुदामा हो जाता है
गगन-धरा
सब तुम्हारा
कुछ भी नहीं
मेरा
सोचा
बाँध लूँ
रिस्तों में
रुकमणी बन कर
पर
क्या करूँ
मन
राधा
बनकर
पाना चाहता है
तुमको..!

है कौन

कोई तो है
जो
रहनुमा सा
लगता है

मेरी
राहो से
काँटे
अपनी पलकों से
उठाता है

मेरे हर दर्द में
होता है
साथ

पर
सामने नहीं आता

सपनो में भी
धुंधला सा
दिखता है
उसका
चेहरा

मेरी
खुशियों में
दूर खडा
मुस्कुराता है

कुछ
जुदा जुदा
सा
लगता है

सच
खुदा सा
लगता है

क्यों?

रूठ कर
चले गये
तुम

दूर
बहुत दूर

कर गये
अकेला

छोड गये
यादें

कहाँ गये वो वादे
साथ चलने का !
संग जीने का !!

घरौंदे बनाने का!
सपने संजोने का!!

जानती हूँ
लौटोगे नहीं
फिर भी
इंतजार है
न जाने
क्यों ??

कलम

ऐ
कलम
थाम ले
बाहें मेरी

बता दे
मंजिल
दिखा दे
ताकत

न रहे
नाम मेरा
हासिये
पर
ऐ

कलम
चल संग-संग
कर दे
सतरंगी
जिंदगी मेरी

भर दे
इतनी ताकत
कि
मिटा सकूँ
सरहद की दीवार

तेरी
ताकत से...

ऐ जिंदगी

यूं न मुख मोड
नजरें मिला
तो मैं चलूँ।

तनाव भरी
दुनियां में
चैन की नींद सुला
तो मैं चलूँ।

खुशी कहाँ ?
मेरे संग
गम में मुस्कुरा
तो मैं चलूँ।

इंसान की
हो कैसे पहचान
चेहरे से नकाब हटा
तो मैं चलूँ।

पत्थरों का
शहर है
शीशमहल बचा
तो मैं चलूँ।

सजी है
अर्थी अरमानों की
काँधों पर उठा
तो मैं चलूँ

बसंत बयार

खिल उठी
नई कोंपले
घुंघट हरितिमा ओढ़
बयार बसंती

बौर की गंध
कर गई
मदहोश

छू गई
देह को
सिहर कर
हुआ गाल लाल
टेसू के फूलों सा

लिपट गई
सूखे पत्तों सी
यादों में
उनकी
बसंत बयार

ऐसा लगा
आम्रकुंज की ओट से
प्रिय ने
देखा हो

देह
सिहरा गई
कोयल की कूक
सखी
फिर से रूला गई।

भावना

राधा
खाया जूठन
कान्हा का

अरे !
यह क्या हो गया ?
कान्हा तो
सचमुच राधा का
हो गया।

क्योंकि
बिकता नहीं
प्यार
होता है
अर्पण !

नहीं होता कोई मोल
भावना का
होता है
समर्पण !!

कर्ज

राशन वाले का !
दूध वाले का !!
बिजली का बिल
नहीं चूका पाती हूँ

लाख कोशिशों के बावजूद
बन
नहीं पाई
आदर्श पिता
क्योंकि
एक औरत हूँ मैं !

संघर्ष
एकाकीपन से
सुई से जहाज तक
रखती हूँ हिसाब
बेहिसाब !

नहीं लगा पाई
खुद का हिसाब
क्योंकि
एक औरत हूँ मैं !!

आँखे

आँसू ने
आँखों से कहा-
तू
रोज-रोज
अपनी पलकों से
गिराती
क्यों हो ?

आँसू बोला-
अरी !
मै तो सहेजना
चाहता हूँ
तू
खुद ही रूखसार से
लिपट
जाती है
क्या करूँ !

कमल

कीचड़ में
मत मारो
पत्थर
छींटे
तुम पर भी
लगेंगे..

हम तो
वहीं
खिलते-पलते हैं
तब ही तो
देवताओं
के
सिर चढते हैं।

दरिया

जाने वो पल
मुझे क्यूँ
भा रहा है
सड़क के किनारे
बिकने को
मिट्टी का घड़ा
किसी की याद दिला रहा है..
मै इस पार
वो उस पार से
मुझे निहार रहा है
इशारे कर कर के
मुझे
पुकार रहा है
हवस के आगे
मिट गये
प्रेम के किस्से
मिट्टी का घड़ा
लेकर
अब दरिया पार
करेगा कौन ?
है प्रश्न ?
और
महिवाल मौन ...

रणभूमि

कोरा कागज
रणभूमि
कलम मेरी
तलवार !

स्याही
मेरा खून
शब्द-अर्थ
मेरी देह

बनूँ
दर्पण
एक आवाज
न हो आभाव
जीवन में
ऐसा हो
काव्य का
भाव !

बहू

अंजान शहर में
अपरिचितों के बीच
रिस्तों में बंध कर
आती है
वो

नये घर को
बनाती है
अपना

मंदिर जैसी
उसूलों में समेटकर
जन्मों जनम का रिस्ता
निभाती है
वो

ममत्व, अपनत्व
में घिर कर
बनाती है
एक अलग पहचान

परिचय उसका
घर की लाज
बहू !

चूडियां

होती है
हरी, नीली, पीली, लाल
सजतीं है
कलाईयों पर
माँ, बहन बेटियों
के

खनकती
नयी नवेली दुल्हन के
हाथों में
रिझाने
अपने प्रियतम को

बन जाती है
निशानी
सुहाग की
चूडियां..

टूटती है
चूडियां
कलाईयों में जब

करती हैं
लहुलूहान
किसी
सुहागन
के
माँग भरी सिन्दूर को
मंगलसूत्र को
बिछुआ को
बाद में
होता है
रक्तरंजित कलाई

तब
होता है आहत
आईना

रोता है देखकर उसको
जो कभी बैठकर
सामने उसके
सजा संवरा करती
और
हौले हौले डालती
एक एक करके
कलाईयों में
रंगबिरंगी
चूड़ियां..

माँ

माँ
अर्पण है
नमन तुमको
दिल से

कर लो
स्वीकार
शब्दों की पुष्पलता

फिर से
आओ
गले लगाओ

मै तो
काल के हाथों
छली गई

अभी भी होता नहीं
विश्वास
कि
तू चली गई।

मिट्टी का दीया

करुण स्वर से
बोली मुन्नी
विनय भाव से
जोडी हाथ

सड़क किनारे
छांव पेड के
बेचने लाई
दीये साथ

बाबू जी! ओ बाबू जी!!
ले लो दीया

नहीं फरेबी
नहीं चाईना
बापू ने है
गढ़ा दीया

है सस्ते और
प्रीत घुले
जगमग जगमग
खूब जले

रंगो से मैने सजाया है
सबके मन को भाया है
मिट्टी का
ये प्यारा दीया
बाबू जी !!
ले लो न दीया

अम्मा की उम्मीद
बापू की कलाकारी है
सच बाबू जी
इसी से चलती
जिविका हमारी है

मिलजुल मनाओ
दीपोत्सव
बस जलाओ
मिट्टी का दीया

सुनो सुनो
ओ बाबू जी

हमारी निर्धनता भी
मिट जायेगी
बस इतने
उपकार से
मुन्नी भी
मनालेगी
इस बार
दीवाली प्यार से

बेटी और पेड

बेटी और पेड़
बचाकर रखना

दोनों हैं
सृष्टि की रचना

देते हमको निःस्वार्थ प्रेम
कभी न जताते
एहसान हम पर
सदा
रखे व्यवहार सम

सह कर भार विपत्तियों का
विनय भाव हैं सिखलाते
पतझड़ में भी
आस न तजना
खुश रहना बतलाते

शरीर बेटी है
पेड़ सांस की संजीवनी

आओ पेड़ लगायें
अपने प्रकृति और बेटी को
विपदाओं से बचायें।

क्या लिखूँ

क्या लिखूँ
खुशी लिखूँ
गम लिखूँ

दोनो के आने पर
होती हैं
आँखें नम
एक दिखता है
दूजा छिपाता है

दिखावा पहेली है
अनदेखी सहेली है
हसरतें
मेरी
तन्हाँ खड़ी
अकेली है

काश!ऐसा होता

काश! ऐसा होता
कि
मेरे पास होते तुम
तुम्हारा साथ मिलता
जिन्दगी मिलती
चैन की सांस लेती

चिर अपरिचित से
प्रथम परिचय की जैसी
गुदगुदी होती
हृदय रसपूर्ण होता

भूमि ऊसर
उर्वरा होती
कि
पावन प्यार मिलता

राह की परवाह
करता कौन ?
किसको क्या पडी थी

मै अकेली
का भी
क्यों प्रश्न उठता

ये सभी हैं
इसलिए
कि
तुम नहीं हो पास

वरना !
अब तक
जिंदगी का सुख कोई
क्यों बचा रहता

होते हम दोनों
देखती दुनिया
प्रीत कमल खिलता

काश! ऐसा होता !!

कान्हा जी

कान्हा के
रसीले नैंन
रस भरे
प्यारे नैंन

देख देख
मुखडा को
नहीं पडे
चैन है।

मन में
बसाया उसे
सबसे
छिपाया उसे
बंसी की
धुन सुन
नहीं आवे
चैन है।

कैसे मै
रिझाऊँ उसे
प्रीत गीत
गाऊँ कैसे
सोच सोच
डर लागे
मनवा बेचैन है।

जब होंगे
कान्हा साथ
मेरे सिर
होगा हाथ
चरणधूलि
लू माथ
अब आवे
चैन है।

अग्निपथ

अग्निपथ पर
कर्मठ
बन चलने को तैयार

सामर्थ्य मुझमें
लक्ष्य भेदने
किया
अथक प्रयास

गर्भ से सीख कर
तोड सके जो
चक्रव्यूह
उस अभिमन्यु
की है
तलाश

गुरू द्रोण की प्रतिमा
बना कर सीखा
तीरंदाजी
उस एकलव्य सा
गुरू भक्ति का
हो मुझमें
एहसास

रणभूमि में सारथी बन
कहे मुझे कोई पार्थ
युद्धभूमि में
करू दुष्ट संहार

चहूँ दिशा में
गूंज रहा
गीता का उपदेश
इस युग में भी
हो रहा मुझे
कान्हा का आभास

अखबार

सायकिल की
ट्रिन ट्रिन घंटी
जगा गई
अलार्म की तरह

नींद से मुझे
वो
अखबार वाला मुन्ना

बावली सी
सी भागती चली
आई
दरवाजे तक
लेने
अखबार

चाय की चुस्की संग
खबरों से गुप्तगू होने
जैसे ही
पृष्ठ खोली
गोलू ले गया
अखबार छीन कर

रह गई
अवाक सी
उसके कारनामे
देखकर

अपनी नन्ही
सायकिल पर
हाकर बनने का
करने लगा अभिनय

आज की
ताजा खबर!
ताजा खबर!!

मै गुस्से से तमतमाई
जोर से चिल्लाई --

क्या यह दिन देखने
को
तुम्हें पढा रही मै

उसने पलट कर
दिया जवाब

माँ
कल तुमने ही पढाया
था
अखबार बेचने वाला
नन्हा बालक बडा
होकर
अब्दुल कलाम बना

फिर मैं क्यों
नहीं बेच सकता
अखबार

काम
कोई बडा या छोटा
नहीं होता
सोच
बडी रखना है

सपने
भी देखना है

तुम्हारा ही कहना है
कलाम सा बनना है

मेरा स्कूल

टन-टन घंटी बजती थी
मै भागी सी चली जाती
उपर नीचे दो चोटी मेरी
लाल रिबन में खिलती थी

वो बचपन वाला स्कूल मेरा
बहुत याद आता है

पुस्तक जिसमें रखती थी
वो बाबू जी का
सब्जी वाला झोला था
टिफिन कहाँ देती थी अम्मा
मै साथ थाली ले जाती थी

वो बचपन वाला स्कूल.....

खा कर खिचड़ी स्कूल का
मै तृप्त बहुत हो जाती थी
सबसे पहले पहुंच स्कूल
यह सोच बहुत इठलाती थी

वो बचपन वाला स्कूल....

सखी मेरी रह जाती पीछे
में पी.टी.उषा बन जाती थी
झाड़ू लगा इतराती मै
धूल मुंह का पोंछ फ्राक से
टाटपट्टी पहले बिछाती थी

वो बचपन वाला स्कूल.....

प्रथम पंक्ति बैठने को मै
यह सब कर जाती थी
पाकर ज्ञान गुरुजनो का
विश्व तिरंगा गाती थी

वो बचपन वाला स्कूल....

जब छुट्टी की घंटी बजती
घर भागी भागी आती थी
अम्मा मेरी खूब समझती
पढ कर आई है मेरी बेटी
कहकर गले लगाती थी

वो बचपन वाला स्कूल....

पंख

जिंदगी के पंख
तो
कब के
कतरे गये है

वो तो
मेरे
शब्द हैं

जो
हौसलों से
उड़ान भरते हैं

आसमान
छुने की चाहत
किसे नहीं होती

पर
यह जो धरती है
जो
गिरने वालों को

उठाने का
सिखाती है
हूनर

फना

टूटते
घरों का
वो
मंजर
देखा है।

रिस्तो को
ईंटों सा
बिखरते
देखा है।

कितनी
मशक्कत से
संभाली
थी
दीवारों को

मैने
मिट्टी में
धंसते
खंजर सा
देखा है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - सुश्री लता नायर

पिता - स्व.पी.आर.कुटट्पन

माता - स्व. लीला नायर

जन्मतिथि- २२/०५/१९७५

शिक्षा - एम.ए.(हिन्दी)

पद - शिक्षिका

रुचि - कविता लेखन,लघुकथा लेखन

पता - ग्राम-कुंवरपुर, पोष्ट-लखनपुर, जिला- सरगुजा, छत्तीसगढ़ पिन-४९७११६

मोबा. - ९५७५६२२७२२

सम्मान - विश्व हिन्दी रचनाकार मंच दिल्ली, के द्वारा श्रेष्ठ कवियित्री सम्मान (ग्वालियर), विश्व हिन्दी रचनाकार मंच दिल्ली, के द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान (भोपाल), राष्ट्रीय कवि संगम सरगुजा संभाग, द्वारा आयोजित संभागीय सम्मेलन में सम्मानित (मनेंद्रगढ़)

अन्य उपलब्धि -

विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविताओं का प्रकाशन,
आकाशवाणी केंद्र अम्बिकापुर से समय समय पर कविताओं का प्रसारण
छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के प्रांतीय सम्मेलन(कोरबा) में काव्यपाठ
राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय अधिवेशन (माउंट आबू) में काव्यपाठ
राष्ट्रीय कवि संगम के प्रांतीय सम्मेलन(रायपुर) में काव्यपाठ
राष्ट्रीय कवि संगम के संभागीय सम्मेलन(मनेंद्रगढ़) में काव्यपाठ
अन्य कई मंचो में काव्यपाठ

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-055-1
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध